एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आज़ादी के बाद कृषि में क्रांति

(*कमलेश गुर्जर[1] एवं महेश दत्त भड़ाना[2])
[1]कृषि विस्तार शिक्षा विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान
[2]सस्य विज्ञान विभाग, डीएसबी परिसर, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड
*संवादी लेखक का ईमेल पता: kamleshgurjar0962@gmail.com

याद कीजिए 1965 का दौर जब भारत पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और अमेरिका ने युद्ध रुकवाने के लिए हमारे देश को गेहूं देने से मना कर दिया था या फिर एक अमेरिकी अख़बार ने अपने मुख्य पृष्ठ पर हमारे देश को भिखारियों का देश तक लिख दिया था। लेकिन आज आज़ादी से लेकर अब तक 76 साल में हमनें कृषि में इतनी तरक्की कि है कि वही अमेरिका व अन्य देश हमारे देश से गेहूं व चावल के लिए गुहार लगा रहे हैं। कोराना काल में जब सभी क्षेत्र धराशाई हो गए थे तब एक मात्र कृषि क्षेत्र था जो देश को कमजोर नही पड़ने दिया था।

दुनिया में आज हम दूध व दाल उत्पादन में प्रथम स्थान पर काबिज़ है तथा चावल, गेहूं, सब्जी, फल, मूंगफली व गन्ना उत्पादन में दुसरे स्थान पर काबिज़ है। पिछले साल 2021–22 में हमनें 315 मिलियन टन से ज्यादा खाद्यान उत्पादन किया था और बागवानी में 350 मिलियन टन का उत्पादन किया है जो कि अपने आप में काबिल ए तारीफ़ है।

यह सब कैसे हुआ

आज़ादी के बाद से लेकर अब तक हमारे देश के किसानों की अथर्क मेहनत व सरकारों की कल्याणकारी योजनाओं की बदौलत हमनें यह मुकाम हासिल किया है। जैसे कि 1965 के दौर में निकली हरित क्रांति का प्रभाव यह पड़ा कि आज हम खाद्यान्न संपन्न राष्ट्र है। उसके बाद श्वेत क्रांति ने हमारे किसानों को आर्थिक मजबूती प्रदान की है। और विश्व में आज हम पिछले काफी सालों से दूध उत्पादन में प्रथम पायदान पर मौजूद हैं। इसके बाद जिनकी भी सरकार बनी उन्होनें कृषि क्षेत्र में बहुत सारी क्रांति व कल्याणकारी योजनाएं लेकर आई और कृषि में महत्वपूर्ण कदम उठाए। जिससे हमारे किसानों ने कठिन परिश्रम करके पूरे देश को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाया।

वैश्विक स्तर पर कृषि की पहचान

आज वैश्विक कृषि में हम मुख्य तीन शीर्ष देशों में अपने आप को काबिज़ कर रखा है। तथा 50 से ज्यादा देशों को अपने उत्पादन का निर्यात करते हैं। विश्व पटल पर हमारी पहचान का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब हमारी केंद्र सरकार ने पिछले साल गेहूं निर्यात व इसी साल जुलाई 22 को गैर बासमती चावल पर रोक लगाई है तब से अमेरिका व अन्य देशों में बवाल मच गया उठा था और अभी भी हमारे देश पर निर्यात प्रतिबंध हटाने पर दबाव बनाया जा रहा हैं। और जो देश अपने आप को तथाकथित रूप से विकसित देश कहते हैं वो सभी हमारे इस फैसले को गलत ठहराने में लगे हुए हैं और इस कदम को विश्व शांति के विरुद्ध बता रहे हैं। लेकिन हमारी केंद्र सरकार का यह सबसे महत्वपूर्ण और अहम फैसला है। क्योंकि सबसे पहले देश की खाद्यान्न सुरक्षा महत्वपूर्ण है ताकि महंगाई दर न बढ़े।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने आज़ादी के पर्व पर लाल किले पर संबोधन में कहा कि आने वाले पांच साल में भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यस्था बनेगा और जब हम आजादी की 100 वी वर्षगांठ मना रहे होंगे तब हम एक विकसित देश होंगे। यह सब बेशक होगा और हम सभी इस क्षण को हर्षोल्लास पूर्वक खुशी से मनाएंगे। लेकिन इसके लिए हमें कृषि में कुछ महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाने होगे जिससे हमारा किसान भी संपन्न हो।

किसान संपन्न

आज हम खाद्यान्न सम्पन्न राष्ट्र है और इसमें सबसे बड़ा योगदान हमारे देश के किसानों का है। लेकिन आज किसान की हालात बहुत खराब है। वो चाहता ही नहीं है कि उसका बेटा भी खेती करें। आज गांव से पलायन हो रहा है, रोज हजारों लोग खेती छोड़ रहे हैं। प्रतिदिन 20 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

इन हालातों को बदलने के लिए हमें ऐसे प्रारूप व कानून लाने होंगे जिसमें गाँव व किसान मुख्यधारा में हो।कृषि क्षेत्र में हमें शोध, शिक्षा को बढ़ावा देना होगा और हमारी जीडीपी का एक बड़ा हिस्सा इस पर खर्च करना होगा। ताकि गुणवता युक्त शोध व शिक्षा का विस्तार हो।

किसान को किसान न समझकर हमें एक ग्राहक के रूप में भी समझना होगा ताकि जब किसान बाजार में जाएगा और कोई चीज खरीदेगा तो बाजार में मांग बढ़ेगी और इससे राष्ट्रीय अर्थव्यस्था सुधरेगी। लेकिन यह तभी होगा जब किसान को जेब में रुपया आएगा और यह रुपया तभी आएगा जब किसान को उसकी फसल का अच्छा मूल्य प्राप्त होगा।

हमें कृषि में बेहतरीन योजनाओं को लागू करना होगा और गाँव को इतना मजबूत बनाना होगा कि शहर के लोग गांवों की तरफ पलायन करे।

आज देश में 60 प्रतिशत लोग खेती से जुड़े हुए हैं और 45 प्रतिशत लोग खेती कर रहे हैं। अगर हमने इस संख्या को मजबूत कर दिया है तो हमारे देश को विकासशील से विकसित बनने में कोई नही रोक सकता है। यह वक्त भी हमारा है और आने वाला वक्त भी हमारा है।

अगर हमारी सरकारें वाकई में देश की वैश्विक स्तर पर बदलाव चाहती हैं तो हमें कृषि को एक मजबूत क्षेत्र के रुप में स्थापित करना होगा ताकि जब कभी भी किसी युवा का मन कृषि में जुड़ने का हो तो कोई उसे यह नही कह सके कि यह तो नुकसान वाला क्षेत्र है।